Fortnightly per copy Rs. 4/- 18th August 2023

ओ३म्

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హింందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Website : http://www.aryasabhaapts.org Narendra Bhavan Telephone : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

चमकदार मोती के आकार का लघु द्वीप मॉरिशस हिन्द महासागर के दक्षिण पश्चिम में

एक अद्भुत व सुन्दर तथा बहुत ही विकसित देश मॉरिशस है

टापु की कुल लम्बाई ७०-७५ कि.मि. तथा चौड़ाई ५० कि.मि. है।

एकदम हरा भरा तथा बहुत ही विकसित और सुन्दर प्रदेश है।

लगभग २०० वर्ष पहले ब्रिटिश लोगों ने मज़दूरी करवाने हेतु भारत से मज़दूरों को एक अग्रीमेंट के तहत मॉरिशस ले गए थे।

मॉरिशस देश के राष्ट्रपति श्री पृथवीराज सिंह रूपन (आर्य समाजी परिवार) के साथ सभा प्रधान प्रो. विट्ठल राव आर्य तथा उपप्रधान आचार्य हरिकिशन वेदालंकार व अन्य मित्र

दास प्रथा के समाप्त होने के बाद भारत से ले जाए गए मज़दूर अग्रीमेंट(अ ग्रीमेंट) उच्चारण की अपभ्रंशता के कारण गिरमिट कहलाए और बाद में यही लोग गिरमिटियां शब्द से प्रसिद्ध हुए और वहीं के हो गए। इनका जीवन शुरुआत की दिनों में दासो जैसे ही था बहुत कष्ट उठाकर भारतीयों ने इस देश को सोने का देश बना दिया। साथ ही साथ अपनी भारतीय परम्पराओं का पालन करते हुए, भारतीय संस्कृति से अपने अस्तित्व की पहचान बनाई। आर्य समाज मज़दूर लोगों को संगठित करने वह उनके अधिकारों को दिलाने में तथा सांस्कृतिक पहचान बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्य समाज ने वैदिक संस्कृति के महत्व को समझाते हुए हिन्दी भाषा के माध्यम से जन आन्दोलन को खड़ा किया तथा आज़ादी दिलाने तक पूरे शिद्दत के साथ मॉरिशस आर्य समाजियों ने लड़ाई लड़ी और आज़ादी पाकर आज एक विकसित देश बनाया । पूरे देश में लगभग ४०० गाँव है और पूरे गाँवों में लगभग ४५० आर्य समाजें हैं तथा बहुत ही व्यवस्थित आर्य समाजें हैं जिस पर मॉरिशस को ही नहीं पूरे भारत वर्ष को गर्व होना चाहिए। मॉरिशस विश्व की आर्य समाजों के लिए एक आदर्श उपस्थित कर रहा है।

॥ ఓ3మ్ ॥

ఆహ్వానము

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ అధ్వర్యములో
ఆర్య సమాజము మెట్టుగూడ, సికింద్రాబాద్ సౌజన్యముతో

సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము

మరియు

హైదరాబాద్ ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినము

తేది : 31 ఆగస్టు 2023 గురువారము, ఉ॥ 9-00 గం॥ల నుండి

స్థలము : వైదిక ఆశ్రమ్, కన్యాగురుకుల్, కుందన్‌బాగ్, బేగంపేట్, హైదరాబాద్

కార్యక్రమము :

నూతన యజ్ఞోపవీత ధారణము మరియు శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వ యజ్ఞము

యజ్ఞ బ్రహ్మ : **డా॥ వసుధ అరవింద్ శాస్త్రి గారు**
భజన : **పం. ప్రియదత్ శాస్త్రి గారు**
వేదోపదేశకులు : **డా॥ ఆచార్య విశ్వశ్రవః గారు,** వైదిక ప్రవక్త
సభాధ్యక్షులు : **శ్రీ విఠల్ రావ్ ఆర్య గారు,** ప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర. తెలంగాణ
విశిష్ట అతిథిలు : **శ్రీ వెంకట రఘురాములు గారు,** మంత్రి ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర. తెలంగాణ

ఆర్య సత్యాగ్రహము నందు అమరులైన ఆర్య వీరులకు శ్రద్ధాంజలి ఘటింపబడును.
నిర్వాహకులు : **శ్రీ హరికిషన్ వేదాలంకార్ గారు,** ఉపప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర. తెలంగాణ

ఆర్య సత్యాగ్రహంలో బలిదానులైన వారికి శ్రద్ధాంజలి

హైదరాబాద్, సికింద్రాబాద్ జంటనగరాల ఆర్య సమాజ అధికారులకు, సభ్యులకు మరియు ఆర్య బంధువులందరితో మనవి చేయడమేమనగా కుటుంబ సమేతముగా అధికాధిక సంఖ్యలో పాల్గొని శ్రావణి ఉపాకర్మ కార్యక్రమములో పాల్గొని కార్యక్రమమును జయప్రదము చేయగలరని మనవి.

భవదీయులు

వెంకట రఘురాములు	**విఠల్ రావు ఆర్య**	**ఆచార్య విశ్వశ్రవః**
మంత్రి	ప్రధాన్	ప్రధాన్

ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ   ఆర్య సమాజ్ మెట్టుగూడ, సికింద్రాబాద్

॥ ओ३म ॥

निमंत्रण

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में

आर्य समाज मेट्टुगुडा, सिकन्दराबाद

के सौजन्य से नगरद्वय की आर्य समाजों का

श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दि. ३१ अगस्त २०२३ गुरुवार प्रातः ९-०० बजे से आयोजित किया गया है ।

स्थान : वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल, कुन्दन बाग, बेगमपेट, हैदराबाद

कार्यक्रम :

नूतन यज्ञोपवित धारण व श्रावणी उपाकर्म पर्व यज्ञ

यज्ञ ब्रह्मा : **श्रीमती डॉ. वसुधा अरविंद शास्त्री जी**
भजन : **पं. प्रियदत्त शास्त्री जी**
वेदोपदेश : **आचार्य विश्वश्रवः जी**
अध्यक्षता : **श्री विठ्ठल राव आर्य जी,** प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.- तेलंगाना
विशिष्ट अतिथि : **श्री वेंकट रघुरामुलु,** मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.- तेलंगाना

आर्य सत्याग्रह के बलिदानियों के प्रति श्रद्धांजलि

संयोजक : **श्री हरि किशन वेदालंकार,** उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.- तेलंगाना

अतः नगरद्वय के समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों, सदस्यों तथा धर्मप्रेमी बन्धुओं से निवेदन है कि अपने परिवार एवं मित्रों के साथ अधिक संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाएं ।

भवदीय

वेंकट रघुरामुलु	**विठ्ठल राव आर्य**	**आचार्य विश्वश्रवः**
मंत्री	प्रधान	प्रधान,

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.- तेलंगाना   आर्य समाज मेट्टुगुडा, सिकन्दराबाद

अनुव्रती पुत्र

-नरेन्द्र आहूजा

संसार में मनुष्य के रूप में जन्म लेने के उपरांत हमारा नैतिक कर्त्तव्य बन जाता है कि हम अपने जन्मदाता माता-पिता के प्रति पूरी निष्ठा से सेवाभाव रखते हुए उनका अनुव्रती होकर अपने पुत्र धर्म का निर्वहन करें । इस संदर्भ में परमपिता परमेश्वर द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही समस्त प्राणियों के लिए आचार संहिता के रूप में दिए गए ईश्वरीय ज्ञान वेद में भी स्पष्ट आदेश है **अनुव्रतः पतुिः माता भवतु संमना** । अथर्ववेद ३/३०/२ अर्थात पुत्र पिता के उद्देश्यों व्रतों के अनुकूल चलने वाला हो तथा माता के साथ प्रीति युक्त मन वाला हो । इस प्रकार पुत्र धर्म के निर्वहन के लिए पिता के व्रतों के अनुकूल चलना अनिवार्य बताया गया । वैसे भी लौकिक व्यवहार में हम अपने जीन में अपना तनिक सा उपकार करने वाले का भी धन्यवाद विनम्रता पूर्वक करते हैं । यदि गर्मी के मौसम में कोई शीतल जल पिला दे तो उसका हम सभी धन्यवाद करते हैं तो फिर माता पिता के उपकारों को भुला कर हम कैसे कृतघ्नता दोष या पाप के भागी बन सकते हैं ।

लेकिन अब यहां एक और प्रश्न उत्पन्न होता है यदि किसी का पिता शराबी, कबाबी और सधार्मिक हो तो क्या पुत्र को अपने पिता का अनुकरण करते हुए स्वयं भी बिगड़ जाना चाहिए या फिर ऐसे समय में पिता के इस अधार्मिक आचरण के विपरीत चलना चाहिए । यहां इस बात को एक अन्य लौकिक उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं यदि कोई आगे चल रहा वाहन सड़क पर बने गड्डे में फंस जाता है तो हम उसकी विपरीत स्थिति देखकर अपने वाहन की दिशा को परिवर्तित कर लेते हैं । ठीक इसी प्रकार यदि किसी कुसंग में फंसकर पिता ने अपनी जीवन यात्रा को कुमार्ग के गड्ढों में फंसा दिया तो उनकी इस विपरीत स्थिति से भी शिक्षा लेते हुए स्वयं का बचाव करना और अपने जीवन को सुमार्ग पर चलाना ही उचित है । वैसे भी ऐसी स्थिति में पिता के नशेड़ी या कुमार्गी होने पर परिवार पर मड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव से हमें यही शिक्षा मिलती है कि इस स्थिति में हमें पिता के कुमार्ग पथ का अनुकरण नहीं करना है ।

अब प्रश्न उठता है कि इस स्थिति में वेद भगवान के आदेश **अनुव्रतः पितुः पुत्रौ** अर्थात् पिता के अनुव्रती होने का क्या होगा । इसके लिए हमें 'अनुव्रती' होने का अभिप्राय समझने के लिए इसके यौगिक अर्थ को जानना होगा । यजुर्वेद में व्रत की व्याख्या करते हुए कहा **अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् । इदमहमनृतात्सत्मुपैमि ॥** यजु १/५ अर्थात् हे सत्यप्रकाश स्वरूप परमात्मन् आप व्रतों के पालक एवं रक्षक हैं । मैं असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करने का व्रत लेता हूं मुझे इस व्रत को पूर्ण करने की शक्ति प्रदान करें । इस वेद मंत्र में दी गई व्रत की परिभाषा शुभसंकल्प से स्पष्ट हो जाता है कि अनुव्रतः होने का सीधा अभिप्राय यही है कि हमें अपने जीवन में पुत्र धर्म का निर्वहन करने के लिए पिता के व्रतों अर्थात् शुभसंकल्पों अर्थात् असत्य त्याग कर सत्य मार्ग पर चलने का ही अनुसरण करना है । यक्ष युधिष्ठिर संवाद में युधिष्ठिर ने पिता को आकाश से भी ऊँचा बताकर पिता के महत्व को स्थापित किया है और अपने जीवन में अपने पुत्र से पराजित होने की प्रसन्नता की भव्य एवं दिव्य भावना का वर्णन पिता के लिए किया है । इससे भी स्पष्ट है यदि पिता कुमार्गी अधार्मिक है तो वह अपने पिता होने का दायित्व नहीं निभा रहा ऐसी स्थिति में पिता के उस कुमार्ग का अनुसरण करना पुत्र के लिए आवश्यक नहीं है । माता पिता के लिए पृथ्वी भर की समस्त संपदाओं से भी अधिक मूल्यवान पुत्र सम्पदा है । और पुत्र को **"पुनाति त्रायते च"** अर्थात् कुल को पवित्र करने वाला और माता-पिता की रक्षा करने वाला कहा गया । इस बात को एक अन्य प्रकार से समझने का प्रयास करते हैं । हमारे पिता फिर पिता के पिता दादा और दादा के पिता परदादा ऐसे यह लंबी कड़ी सृष्टि के उत्पतिकर्ता परमपिता परमेश्वर तक जाती है । अब इस लंबी अंतहीन सी कड़ी में बीच में किसी ने यदि अपने सच्चे पुत्र धर्म का निर्वहन नहीं किया तो यह कड़ी टूट जाती है । अब इस टूटी कड़ी को जोड़ने और अपनी वंश परम्परा को परमपिता तक पहुंचाने के लिए हमें परमपिता परमेश्वर का सच्चा अनुव्रती होना पड़ेगा । इससे लंबी वंश परम्परा में यदि कहीं अप्रभंश दोष आ गया है तो हम परमपिता परमेश्वर तथा उन द्वारा प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुगामी होकर उस आ गए दोष को दूर कर सकते हैं । हमें इस बात की प्रेरणा मिलती है जैसे यज्ञ की अग्नि में आहूत होकर समिधा अपने अंदर छिपी अग्नि को अग्निदेव के साथ एकरूप करते हुए अग्निस्वरूप हो जाता है ठीक उसी प्रकार इस मनुष्य जीवन में हम भी अनुव्रती होने का सच्चा अभिप्राय समझ कर अपनी आत्मा को अग्नि स्वरूप परमात्मा को समर्पित कर उनके गुणों से एकरूपता स्थापित करते हुए उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने का शुभ संकल्प लेते हुए पिता के अनुव्रती होने के धर्म का निर्वहन कर सकते हैं । लौकिक जीवन में पिता के सभी शुभसंकल्पों संस्कारों को अपनी बुद्धि विवेक की छलनी में से छानकर उन्हें अपने जीवन में धारण करना ही पिता का अनुव्रती होना कहलाता है ।

वैदिक जीवन मूल्यों की सार्वभौमिकता

-डॉ. स्नेहलता गुप्ता

चारों वेद मानवीय मूल्यों के निर्णायक ग्रन्थ हैं। योग के यम नियमों, धर्म के दसों लक्षणों औरचारों पुरुषार्थों के जीवन्त उदाहरण हैं ।- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रहक तथा शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधानख- ये यम नियम, धैर्य, क्षमा (इन्द्रियों का) दमन, अस्तेय, शौच (पवित्रता) इन्द्रिय-निग्रह बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध (क्रोध न करना)-धर्म के ये दस लक्षण, क धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-ये चारों पुरुषार्थ ये सब मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत हैं। ऋग्वेद के एक मन्त्र में संक्षेप में इनको सप्तमर्यादा के रूप में परिगणित करते हुए लिखा है कि-हिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्य भाषण और इन पापों को करने वाले दुष्टों के सहयोग का नाम सप्त मर्यादा है, इनमें से जो एक भी मर्यादा का उल्लंघ करता है अर्थात् एक भी पाप करता है, वह पापी होता है।

हिंसा का निषेध करते हुए यजुर्वेद (वा.स.-६/९२) में लिखा है कि मनुष्य को न तो सर्प के समान विषैला होना चाहिए और न व्याघ्रादि के समान हिंसक। वेदों में पशुवध और मांस भक्षण को पूर्णतया अनुचित माना है। और 'मा हिंसी' शब्द के द्वारा यत्र तत्र इसका विरोध भी किया है। **यज्ञ को अध्वर कहने का तात्पर्य यज्ञ के** अहिंसक होने का ही पर्याय है। महाभारत के अनुशासन पर्व में हिंसा के विपरीत लिखा है कि, अहिंसा परम धर्म है, परम तप है, परम सत्य है, इसी से धर्म प्रवर्तित होता है, किन्तु हिंसा के भय से ग्रस्त मनुष्य सदाचार के पथ से विचलित होकर पाप करने के लिए प्रवृत्त हो सकता है इस भय से छुटकारा पाने का किसी भी ग्रन्थ में अथवा अन्यत्र कोई उपाय नहीं है, हाँ वेदों में अवश्य ही अभय प्राप्ति का एक ऐसा मन्त्र है, जिसमें मित्र से, शत्रु से ज्ञात से, अज्ञात से, रात्रि में, दिन में एवं समस्त दिशाओं में भय रहित होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है। इस प्रकार भयरहित एवं अहिंसक व्यक्ति की शान्ति प्रिय होता है। और शान्ति का अभिप्राय है-ईर्ष्या, द्वेष, कलह और लड़ाई आदि की निवृत्ति, राग द्वेष दुःख दरिद्रता की समाप्ति, पशु पक्षियों की हत्या से उत्पन्न करुण क्रन्दन का अन्त, वृक्षों पर चलती हुई कुल्हाड़ी की रोक। अथर्व वेद का ऋषि मानवों को परामर्श देता हुआ कहता है कि जीवन रूपी पथरीली नदी बह रही है, उठो और प्रयत्न से पार करो, ज हमारे कल्याण के विरुद्ध हैं, उनका साथ छोड़ों। इस प्रकार वैदिक विचारधारा अहिंसा है। **शठे शाठ्यं समाचरेत्** की नीति को उचित ठहराती है। विरुद्ध आचरण करने वाले व्यक्तियों को भस्मसात् करने का आदेश देती है। किन्तु आज हमारे देश में राजनीति के नियम कानून भी वेदों के इस मानवीय मूल्य का उपहास कर रहे हैं। एक मुजरिम जो हमारे लोकतन्त्र के प्रतीक संसद भवन पर हमला करता है, वहां के रक्षकों को मौत के घाट उतार देता है, पुलिस उसे पकड़ती है और न्यायालय उसे फांसी की सजा सुनाता है दश की जनता २० अक्टूबर २००६ पर (जिस दिन उसे फांसी की सजा होनी निश्चित हुई थी) नज़रे गड़ाये रही किन्तु देश के विश्वासघाती राजनेताओं ने अपनी कुर्सी की सुरक्षा के लिए उसे फांसी नहीं होने दी। जेल में भी उसे सारी सुख सुविधाएं उपलब्ध हैं।

शत्रुओं के लिए अथर्वेद में लिखा है कि शत्रुओं को राजा बाहु छेदन करके विनष्ट कर दे। ऋग्वेद में स्थान-स्थान पर चोर हिंसक व्यभिचारी घृतव्यसनी स्तेन तस्कर आदि विभिन्न प्रकार के समाज विरोधी शत्रुओं को समूल नष्ट करने का संकेत है (ऋग्वेद-२/१२/१६, ऋग्वेद-६/५५/३) किन्तु इस प्रकार शत्रुओं के विनाश में प्रयत्न तथा युक्ति से काम लेना चहिए (अथर्ववेद-४/३२/३) क्योंकि सब काम धर्मानुसार सत्य असत्य को विचार कर करने चाहिए। वस्तुतः अहिंसा अनाचार अन्याय और आड़म्बर के दृढ़ दुर्ग सत्य के द्वारा ही धराशायी हो सकते हैं, इसीलिए प्रजापति ने सत्य और असत्य को समझ बूझकर अलग किया है। असत्य में अश्रद्धा और सत्य में श्रद्धा उत्पन्न की है (यजुर्वेद १६/७७)

मानवीय मूल्यों में सत्य का स्थान सर्वोपरि है। त्रिकालदर्शी-ऋषियों ने दैवी जगत के सत्य को 'ऋत्' और लौकिक जगत के सत्य को 'सत्य' कहा है। **वेद में ऋत् च सत्यञ्चायी द्धात्तपसोऽध्यजायत** (अथर्ववेद १२/१/१) कह कर ऋत और सत्य का एक साथ भी उल्लेख है। ऋग्वेद (१०/६२/३) में यज्ञ को ऋत्त का साक्षात् स्वरूप मानते हुए लिखा है कि यज्ञ करना मानो सत्य को ही प्रतिष्ठापित करना है। इसी सत्य स्वरुप ऋत के मार्ग का अनुसरण समस्त पापों का विनाशक है ऋग्वेद १/४/१ सत्यता के साथ-साथ वाणी की मधुरता का भी वेदों में उल्लेख है संस्कृत के किसी कवि का कथन है कि **सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।**

लोकाचार में भी यह कहा जाता है कि-

ऐसी बाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करें, आपहु शीतल होय।

किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह भी चलता है-

ऐसी बाणी बोलिये, कि सबसे झगड़ा होय।
पर उससे झगड़ा ना करें, जो आपसे तगड़ा होय।

वस्तुतः आज ऋत का स्थान अनृत ने, सत्य का असत्य ने, संयम का असंयम ने, धर्म का अधर्म ने, सन्तोष का असन्तोष ने, कर्त्तव्य निष्ठा का कर्त्तव्य हीनता ने और शीलता का अश्लीलता ने ले लिया है।

आज की भांति वेदकालीन युग में मानव के पास कोठी, बंगले, गाड़ी, दूरदर्शन आदि भोग ऐश्वर्य के साधन नहीं थे वे तो अन्न, धन, गौओं पशुओं, कीर्ति प्रजा (पुत्र, पुत्री, पौत्र, पौत्री आदि) को ही ऐश्वर्य समझ कर (अथर्ववेद १/३१/१) इनकी याचना करते थे, किन्तु आज का युग परिवार नियोजन का युग है संयुक्त परिवारों का स्थान छोटे परिवारों ने ले लिया है।

ऋग्वेद का ऋषि कहता है कि वही स्त्री श्रेष्ठ है जो ब्रह्मचर्य धारण कर वीर पुत्रों को जन्म देने वाली और सहन शील स्वभाव वाली हैं। उग्र वर्चस्विनी कठिन गुण कर्म स्वभाव वाली थी एवं शोभा से सम्पन्न नारियां ही समाज में समादृत होती हैं। ऐसी स्थिर स्वभाव वाली ओजस्विनी नारियां वेद के युग की शोभा थीं। उस काल में नारियों को यह आदेश भी था कि उनके ओष्ठ प्रान्त और कटि का निम्न भाग भी न दिख सके। (ऋग्वेद ८/३३/१९) कहाँ पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित आज की स्वच्छन्दचारिणी मल्लिका शेरावत जैसी नारियाँ।

नारियाँ आज ऐसी बनी मार हैं,
न लज्जा से जिनका सरोकार है।
दोड़ फैशन की हरदम लगी है यहाँ,
थोड़े, कपड़ों में नंगा बदन आज है।

लोपामुद्रा, गार्गी जैसी नारियों से गौरवान्वित था वह वेद का युग, जहाँ नारी-आदर्श पत्नी व आदर्श माता थी। वैदिक युग का वह सुदृढ़ समाज ऐसे परिवार की कल्पना करता था, जहां माता-पिता सन्तान के कल्याण की कामना करते थे वहां पुत्र भी अपने माता-पिता के कल्याण की कामना करता था। (अथर्ववेद १/४/४) ईश्वर की स्तुति द्वारा वह अपने साथ-साथ पिता द्वारा किए गए पापों से भी मुक्ति की याचना करता था। (ऋग्वेद ७/८६/५) वेद के परवर्ती युग उपनिषद काल में इसका स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

कठोपनिषद् का दृष्टान्त है वाजश्रवस ऋषि का पुत्र नचिकेता जब देखता है कि उसके पिता दूध देने में असमर्थ बूढ़ी गायों को दान कर रहे हैं तब वह व्यथित होकर सोचता है कि ऐसे निकृष्ट दान से मेरे पिता कहीं यजुर्वेद के **अन्धेन तमसावृता** के अनुसार निम्न गति को प्राप्त न हो जाएं, इसलिए वह बीच में ही टोक कर कहता है कि हे पिता मुझे किसे दोगे ? पिता के चुप रहने पर और नचिकेता के बार-बार कहने पर पिता वाजश्रवस क्रोधित होकर बोले कि तुजे यम को दूंगा। अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए नचिकेता यमलोक चला गया अपनी अनुपस्थिति में तीन दिन मे से भूखे प्यासे नचिकेता को यम ने अतिथि मानकर तीन बरदान दिए। पहले बरदान में नचिकेता ने यही मांगा, कि मेरे यहां आने से पिता दुखी न हो तथा मेरे लौटने पर मुझे पहचान कर पहले की भांति प्रेम से व्यवहार करें। यह थी एक पुत्र की पिता के प्रति मंगल कामना।

उपनिषद् काल की भांति वेद के युग में भी कर्मशीलता और दानशीलता का मानवीय मूल्यों में विशेष स्थान ता वेद का ऋषि कहता है कि सैंकड़ों हाथों से अर्जन करो और सहस्त्रों हाथों से दान करो ऋग्वेद के दसवें मण्डल का एक सौ सत्रहवा सूक्त है। नीति शास्त्र में भी धन की दान भोग एवं विनाश-तीनों गतियों का उल्लेख है। आज विश्व में धन के सम्पादन और संवर्धन की होड़ है। बुद्धिवादी वर्ग के मस्तिष्क आज यजुर्वेद ३०/३ के **विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव**। को भुलाकर **दुरितो** अर्थात् बुराइयों का ही नित्य अविष्कार कर रहे हैं। कपड़ों का उत्पादन बढ़ रहा है पर रुझान नग्नता की ओर है। घोषणा विश्व शान्ति की है, पर तैयारियाँ विश्व विध्वंस की हैं। आज असत् पृथ्वी लोक से उठ कर द्यौलोक को छू रहा है। सत् का दर्शन तक दुर्लभ है। न जाने हम कब से **सत्यमेव जयते नानृतम्... धर्म एव जयति नाधर्म** के नारे लगा रहे हैं किन्तु असत्य और अधर्म दोनों ही मानवीय मूल्यों का क्षरण करते हुए विश्व व्यापी होकर विजय श्री प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय कालिजों में लड़के लड़कियों के एक से परिधान, हिप्पियों जैसी केश सज्जा, नाच, क्लब, व्यसन, विलास, धूम्रपान, मदिरापान सब पश्चिमीकरण की देन हैं। देश में हर वर्ष सिगरेट की १२१४३ करोड़ की बिक्री हो रही है। मदिरा का बाजार भी २२०६ करोड़ का है। सिर्फ तम्बाकू की वजह से गत वर्ष ४८ लाख मौतें हुई। सिगरेट शराब दोनों मिलकर कैंसर को जन्म दे रहे हैं। उचित तो यह होगा कि हर वर्ष देश के लाखों लोगों की जान लेने वाले शराब एवं तम्बाकू की कम्पनियों के मालिकों के विरुद्ध हत्या का मुकदमा दर्ज हो।

स्वतः ही अपने मानवीय मूल्यों का विनाश करने वाले हम लोगों ने उस आनन्द के श्रोत मोक्ष प्रदान करने वाले (ऋग्वेद ९/११३/११) परमपिता को भुला दिया है किन्तु जीवन के चिरन्तन सत्य इस मृत्युरूपी संसार सागर को पार करने के लिए उस आदित्य वर्ण को जानने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। वेदों में वर्णित ब्रह्म-दर्शन के श्रेय मार्ग को त्याग कर हमने चार्वाक दर्शन का प्रेय मार्ग अपनाया है। आसुरी उपनिषद् के वाममार्गी व्यभिचारी आचार्यों का हम अनुसरण करने लगे हैं। वाममार्गी कालीतन्त्र में लिखा है कि 'म' अक्षर से आरम्भ होने वाली वस्तुँ मोक्षदाई हैं जैसे मद्य, मांस, मछली, मुद्रा (धन) मैथुन और मदिरा के लिए लिखा है कि जो मदिरापान करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। नवम्बर २००६ के **हिन्दुस्तान** दैनिक पत्र में बड़े आकर्षक ढंग से एक सूचना प्रकाशित थी कि **मेघालय में मदिरा महोत्सव** बताइए जहां मदिरा के नाम पर महोत्सव रचाए जाते हों वहां वेद मन्त्रों की अवमानना कर २२ आदर्श मानवीय मूल्यों की बात करना व्यर्थ है। वस्तुतः आज भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व ही व्यसनों और विलासों की रंगभूमि बन गया है।

ऋगवेद (१०/५/६) में लिखा है कि गरूड़ के समान घमण्ड, गीध के समान लोभ, कोक (चिड़ा) के समान काम, कुत्ते के समान मत्सर, उलूक के समान मोह

-शेष पृ. ७ पर

यज्ञों द्वारा संस्कृति का विकास

-पं. बिहारीलाल जी शास्त्री

हमारे यज्ञ एक जातीय प्रदर्शनी के रूप में होते थे। यज्ञों में नट, नर्तक, कलाविद् जन आते थे। उन्हें सादर बुलावा दिया जाता था। यह पता वाल्मीकि रामायण, महाभारत के यज्ञो के वर्णन देखने से लगता है। जब महाराज दशरथ ने अश्वमेध करने का निश्चय किया तो जहाँ यज्ञ-कर्मज्ञ ऋषि मुनि और शास्त्रज्ञ ब्राह्मणों को बुलावा दिया, वहाँ कलाकारों को भी बुलाया। देखियेः- वाल्मीकि रामायण बालकांड सर्ग १३वाँ श्लोक ६ से ८ तकः

ततोऽब्रवीद्द्विजान् वृद्धान् यज्ञकर्मसु निष्ठितान्।
स्थापत्ये निष्ठितांश्चैव वृद्धान् परमधामिकान्॥
गणकाञ्छिल्पिकाश्चैव तथैव नटनर्त्तकान्॥
तथा शुची ञशास्त्रविदः पुरुषान् सुबहुश्रुतान्।
यज्ञकर्म समीहन्ताम् भवन्तो राजशासनात्।

वसष्ठि जी ने आज्ञा दी कि राजा के आदेश से आप लोगों को सब काम करना चाहिए और इन लोगों को आने को आदेश दिया :-

यज्ञकर्मज्ञ वृद्धजन, स्थापत्य कला में निपुण इंजीनियर, मजदूर, अनेक प्रकार के शिल्पकार, बढ़ई, खनक, ज्योतिषी नट, नर्त्तक।

श्री राम ने जब अश्वमेध यज्ञ कियातब भी नट वर्त्तक बढ़ई और काम करने वाले बुलाए गए :-

"तथैव तालावचरास्तथैव नटनर्तकाः"
"कर्मान्तिकान् बर्धकिनः"

उत्तर कांड सर्ग ९२ श्लोक १५ और २४ के टुकड़े।

"कथयन्तः कथा बह्वीः प्रश्यन्तो नटनर्त्तकान्"

सभापर्व अध्याय ३३ श्लोक ४९। इन प्रमाणों से हमें अश्वमेध का कुछ कुछ आभास हो सकता है। ये यज्ञ एक बड़े मेले के रूप में होते थे। पशु, पक्षी, सरीसुप, कीड़े मकौड़े सब की प्रदर्शनी होती थी।

यज्ञवेदी में ईंटें लगती थीं। आकाशस्थ गृहों के वेध चक्र वनते थे। खगोल भूगोल के मानचित्र आदि बनाए जाते थे। अतः रेखागणित, ज्योतिष का आविष्कार और विकास यज्ञों द्वारा हुआ। यज्ञों में शास्त्रार्थ भी चलते थे। वाल्मीकि रामायण और महाभारत में इस बात का उल्लेख है :-

कर्मान्तरे तदा विप्रा हेतुवादान् बहूनपि।
प्राहुः सुवाग्मिनो धाराः परस्परजिगीषया॥

-वा. कां. सर्ग १५ श्लोक १९

इन शास्त्रार्थों के द्वारा तर्क शास्त्र और दर्शन का विकास होता रहता था। काव्य-चर्चा, नाटक और नृत्य भी होते थे। इससे ललित कलाओं का विकास होता था। सबसे प्रथम नाटक "अमृतमंथन" असुरों पर इन्द्र की विजय के स्मारक रूप में इन्द्रयाग में ही खेला गया था। भरतनाट्य शास्त्र में इसकी चर्चा है।

अयं ध्वजमहः श्रीमान् महेन्द्रस्य प्रवर्त्तते।
अत्रेदानीमयं वेदों नाट्यसंज्ञः प्रयुज्यताम्॥

पशु पक्षियों के स्वभावों का ज्ञान अर्थात् उनके 'देवताओं' का ज्ञान यज्ञों में किया जाता था। प्राणी सास्त्र, वनस्पति विज्ञान, कृषि के सूत्र यज्ञों द्वारा निर्णीत हुए। खनिज पदार्थ भी यज्ञ में लाए जाते थे, अतः भूगर्भ विद्या का विकास भी यज्ञों से हुआ। यजुर्वेद को ध्यानपूर्वक पढ़ने से पता लगता है कि पृथिवी के नाना पदार्थोंका ज्ञान यज्ञों में करना पड़ता था। ऋतु-सम्वन्धी जानकारी के बिना तो यज्ञ हो ही नहीं सकते थे। पदार्थों के गुण यज्ञों द्वारा जाने जाते थे। आयुर्वेद का काम भी यज्ञों में पड़ता था। जैसे आजकल की प्रदर्शिनियां ज्ञान बढ़ाने और उद्योग विकास के लिए होती हैं, इसी प्रकार यज्ञ भी देश की सर्व प्रकार की उन्नति के लिए हेतु रहते थे। यज्ञों में वीणा पर सामगायन होता था, अतः गायन कला का विकास भी यज्ञों से हुआ था। यज्ञों का वर्णन पढ़ने से ज्ञात होता है कि आर्यों की सामाजिक स्थिति कितनी सुंदर और आमोदप्रद थी। आर्य संस्कृति और ज्ञान विज्ञान उच्च सीमा पर पहुँच चुका था। राम के यज्ञ में वाल्मीकि के शिष्य के रूप में उनके पुत्रों ने ही वीणा पर रामायण का गान किया था। यज्ञ केवल पारलौकिक धार्मिक विधिमात्र ही नहीं थे। धार्मिकत्व को केन्द्र बनाकर ऐहलौकिक उन्नति इन यज्ञों की परिधि थी। यज्ञों द्वारा दान से संपत्ति-वितरण कर आर्थिक संतुलन भी ठीक रखा जाता था। अतः राजा महाराजा सेट साहूकारों के लिए यज्ञ करने आवश्यक थे।

यज्ञों द्वारा जहाँ प्रकृति को विकृत होने से रोका जाता था वहाँ समाज को भी स्वार्थपरता, असहयोग आदि से वचाकर सहयोग और उपकार की उदात्त शिक्षा दी जाती थी।

यज्ञों का समय निश्चित करने के लिए अच्छी ऋतु हो, दैवी उपद्रवों की आशंका न हो, यह सब जानने के लिए ग्रहों की ठीक-ठीक स्थिति और किस ग्रह का क्या-क्या प्रभाव वायु पर, मेघ पर और पृथिवी पर पड़ेगा यह सब जानना पड़ता था। ज्योतिर्विद्या के विकास के मूल कारण यज्ञ ही रहे थे। अश्वमेध में निर्वाध विचरने के लिए घोड़ा छोड़ा जाता था। यदि कोई उसे रोके तो उससे लड़ना होता था। अतः अश्वमेध करने को एक सुसज्जित सेना का होना आवश्यक था। अस्त्र-शस्त्रों के नए-नए आविष्कार यज्ञों की रक्षा के लिए होते रहते थे।

यज्ञों में अन्नाहुतियाँ भी होती थीं। अग्नि में गेहूँ आदि के पड़ने से उसकी सुगंधि और खिलने को देखकर उसकी उत्तमता, अधमता जानी जाती थी। पुनः अच्छे से अच्छे अनाजों के उत्पादन की विधियों पर विचार कर अन्नोत्पादन में वृद्धि की जाती थी। इसकी शिक्षा यजुर्वेद १८वें अध्याय में है।

'व्रीहयच' में यवाश्च में माषाश्च में तिलाश्च में मुद्राश्च में खल्वाश्च में प्रियङ्गवस्च मेऽणवश्च में श्यामा-काश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ -यजु. १८-१२

"मेरे उपर्युक्त अन्न यज्ञ से कल्पित हों, अर्थात् समर्थं हों, बढ़ें"। यज्ञ का अर्थ है

సత్యజ్ఞానం పొందడమెలా ?

ఈ విషయంలో మా ప్రశ్న ఏమంటే ఈ రెండు శక్తుల్ని ఎవరు కలిపారు ? అని. ఎప్పుడు ఎందుకు ఎవరు చేయడం వల్ల సంయోగం లోనికి వచ్చాయి, ఎవనిచే అంతరిక్ష పదార్థాలు ఈ విరుద్ధగతుల్లో తిరుగు తున్నాయి ?

ఈ తర్కం అఖండనీయము. ఏ వస్తువు ఏ రూపంలో నష్టమౌతుంతో అది ఆరూపంలో ఎప్పుడూ నిర్మింపబడతాయో అప్పుడు నిశ్చల స్థితి నుండి చలనావస్థలోకి వస్తాయి అంటే విఘటీవావస్థ నుండి సంఘటిత అవస్థలోనికి వస్తాయి. న్యూటన్ ఈ నియమాన్ని తెలియ జేశాడు. అదేమంటే ఏదానా ప్రకృతిలోని కణం అచలం నుండి చలనావస్థలోనికి రాలేదు అని. కనుక న్యూటన్ యొక్క ఈ నియమం వల్ల సిద్ధించేదేమంటే సృష్టి రచనా సమయంలో ఎవరో ప్రకృతి యొక్క నిశ్చల కణాల్లో గతిని-చలనాన్ని కలిగించారు అని.

ఇక నాస్తికులు సిద్ధం చేయవలసిందే మంటే అసలు నిర్మాణమే జరగలేదు నాశమే జరుగలేదు అని. ఇలా సిద్ధ పరచిన మిదటనే వీరు సృష్టి కర్తలేదని చెప్పడానికి సమర్థు లౌతారు.

న్యూటన్ చెప్పే గతి సంబంధమైన నియమాల వల్ల సృష్టి కర్త సిద్ధిస్తాడు :-

న్యూటన్ చెప్పే గతి సంబంధమైన నియమాల వల్ల సిద్ధించేదేమంటే ప్రకృతికి భిన్నంగా ఏదో ఒక శక్తి దాని కణాల్లో గతిని కల్పించి రచనా కార్యాన్ని నిర్వర్తిస్తున్నదని, ప్రలయ కాలంలో ఈ గతులకు విరుద్ధ గతిని కల్పించి వీటిని నిశ్చలావస్థలో ఉంచుతుంద నేది.

ఇతి మిథ్యాలోచన ఎందుకవుతుంది ? దీని వల్ల తెలిసే విషయమేమంటే వైజ్ఞానికుల జ్ఞానం ఉత్కృష్టమైందే, కాని, ఆ ఉత్కృష్ట జ్ఞానంతో సత్య వివేచన చేయాలనే బుద్ధి వారిలో లేదు.

సృష్టి స్థితి, లయాలు చేసేవాడు బ్రహ్మము :-

భారతీయ తత్వ శాస్త్రం చెప్పేదేమంటే ఎవనిచే సృష్టి, స్థితి లయాలు జరుపబడుతు న్నాయో అతడు బ్రహ్మము అని.

బ్రహ్మమంటే ఏమిటి ? అతని స్వరూప స్వభావాలు ఏమిటి ? ఇది వేరు విషయం. ఈ విషయంలో కూడ స్థిరమైన తర్కంతో మనం సత్య పరిణామాలను చేరగలుగుతాము

ఉపనిషత్తులలో బుద్ధి పేరు విజ్ఞానమని బుద్ధితో సంయుక్తమైన జీవుడు విజ్ఞానాత్మ అని చెప్ప బడ్డాడు

ఈ కారణంగా భారతీయ శాస్త్ర వైజ్ఞాని కులు అతనిని (బ్రహ్మమును) చెప్పువారు యోగులు కూడ అవుతారు. ఈ కారణంగా ఉపనిషత్ గ్రంథాల్లో బుద్ధి పేరు విజ్ఞానమని చెప్పబడింది. ఇంతే కాకుండా శ్రేష్ఠ బుద్ధి చేత సంయుక్తుడైన జీవాత్మ విజ్ఞానాత్మగా అంగీక రించబడుతున్నాడు.

జ్ఞానం పొందడానికి తగిన సాధనాలు సంక్షిప్తంగా

ఈ ఖండికలో మేము జ్ఞానం పొందడానికి తగిన సాధనాలను ప్రకాశ పరచాము. సంక్షి ప్తంగా అవి తపస్సు, స్వాధ్యాయము, ఈశ్వర ప్రణిధానములు.

संगतिकरण । वैज्ञानिक-संगति करण से अन्नों में बहुत विकास किया जा सकता है । अन्न फल फूल आकार में बड़े, गुणों में उत्तम, संख्या और परिमाण में अधिक किए जा सकते हैं । यजुर्वेद का यह पूरा २२वाँ अध्याय यही उपदेश दे रहा है कि यज्ञ द्वारा संगतकरण द्वारा अन्न, पशु, आदि पदार्थ किस प्रकार बढ़ाए जा सकते हैं । इस अध्याय में राष्ट्रोपयोगी प्रायः सब ही पदार्थों का वर्णन है । यज्ञों में एकत्रित विद्वान् लोकिहित, राष्ट्रहित, राजकल्याण, राष्ट्र के गुणदोष, अपने गुणदोष सब ही पर विचार करते थे । ये यज्ञ एक बड़े सम्मेलन होते थे । इनमें लौकिक पारलौकिक सब ही विषय विचारे जाते थे । यज्ञ का ही बिगड़ा रूप फारसी में ''जशन'' है । ईरानी आर्य ''जशन'' करते थे । जशन केवल मनोरंजन का ही अर्थ रखता है । पर यं शब्दका अर्थ बहुत व्यापक है । जश्नों के समय आर्य लोग यज्ञ के महत्व को भूल गए थे । यज्ञ केवल देवताओं की पूजा यात्रार्थ में रह गए थे । धीरे-धीरे तो पशुबलि और कुर्बानी चल पड़ी । ज्ञान का स्थान अज्ञान ने ले लिया । यह सब वेद विद्या को भूल जाने का परिणाम था । आजकल फिर यज्ञों की प्रथा उमडी है । पर ये यज्ञ एक देशीय ही हैं । इनमें वह महत्व नहीं रहा जो आर्य यज्ञों में था । आर्य यज्ञों के द्वारा आर्य संस्कृति, विद्या, कला कौशल सब की चरमोन्नति हुई । उसी रूप में-राष्ट्रिय सम्मेलन और प्रदर्शनियो केरूप में यदि यज्ञ होने लगें तो इनका वास्तविक उपयोग हो सकता है । ये लाभदायी सिद्ध हो सकते हैं ।

ఆ తరువాత యమ, నియమ, ఆసన, ప్రాణాయామ, ప్రత్యాహార, ధారణ ధ్యాన సమాధులు వస్తాయి.

ఒక వైజ్ఞానికునిలో అవసరమైన గునాలు :-

కనుక ఒక వైజ్ఞానికులో ఈ గుణాలు అవసరమౌతాయి.

1) జిజ్ఞాస. అంటే సత్యాన్ని తెలిసికోడానికి తీవ్రమైన కోరిక ఉండాలి.

2) జిజ్ఞాసను పూర్తి చేయడానికి తపోభా వన అంటే లక్ష్య ప్రాప్తి కొరకు అతి కఠోరమైన పరిశ్రమ చేయడానికి సంకల్పిం చాలి.

3) పరమేశ్వరునిపై విశ్వాసముంచాలి.

4) జ్ఞాన ప్రాప్తికి రెండు సాధనాలున్నాయి. అవి స్వాధ్యాయము, గురు జనుల సేవ.

5) నిర్మలము, అలాగే తీక్ష్ణమునైన బుద్ధి ఉండాలి. వీటి కొరకు యోగాభ్యాసం అవసర మౌతుంది.

-చలవాది సోమయ్య

पृ. ७ का शेष.

(मूर्खता) और भेड़िये के समान क्रोध को मार भगाइये, अर्थात् अभिमान, लोभ, काम, मत्सर, मोह क्रोध इन षट्विकारों को नष्ट कीजिए ऋग्वेद में जुआ, २४ व्यभिचार एवं चोरी जारी से बचने का पूर्णतया निर्देश है । आज ऐसे बहुत से व्यक्ति कहते हुए मिलते हैं कि हमने थोड़ी सी चोरी कर ली तोक्या हुआ, भगवान् कृष्ण भी तो चोर थे । अपनी सभ्यता संस्कृति और संस्कार को भुलाकर आज बुद्धिजीवी मानव ने उन्नति के नाम पर प्रकृति को विकृत कर दिया है । जंगलों को काटकर वायु को दुर्गन्धित कर दिया है । शिकार खेलकर सृष्टि को अस्वभाविक बना दिया है, मनुष्य अनेक रोगों से पीड़ित है पागलपन बढ़ रहा है । आत्म हत्याएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं । मनुष्य को तो यहसोचना चाहिए कि अपनी विवेकशीलता और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण वह समस्त सांसारिक प्राणियों में श्रेष्ठ है । कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने भी अपने काव्य में लिखा है **मानव तुम सबसे सुन्दरतम** अतः मनुष्य मनुष्य ही बना रहे वह अज्ञान रूपी अन्धकार में न डूबकर प्रकाश की ओर बढ़ते हुए जगतपिता परमात्मा के उस द्वार तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील हो (अथर्ववेद ८/१/१६) जो श्रद्धा की तंकरीट और बिश्वास के सीमेन्ट से बना हो और जिसे संकल्प ने दृढ़ता प्रदान की हो ।

हमें गर्व है कि हमारे वैदिक ऋषियों ने वेद के युग की सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों को श्रद्धा विश्वास और संकल्प की दृढ़ता से युगों युगों तक के लिए अमरत्व प्रदान किया । उनके द्वारा स्थापित मानवीय मूल्य एक कालिक व एक देशीय नहीं अपितु सार्वभौम एवं सर्वकालिक हैं । मानवीय मूल्यों का उचित रूप से मूल्यांकन करने के लिए जिन विभिन्न तापदण्डों की आवश्यकता है वे वैदिक वाङ्मय में सर्वत्र विद्यमान है । वेद तो भारतीय ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य, धर्म, संस्कृति और सभ्यता आदि के ही उद्‌गम स्थल नहीं है अपितु सार्वभौम आदर्श मानवीय मूल्यों के भी आधारभूत ग्रन्थ है ।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस एवं सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार दिनांक ३१ अगस्त २०२३ गुरुवार के दिन

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में अपने प्राणों की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष सभा के आदेशों की पूति तथा कर्तव्य पालन के उद्धेश्य से इस वर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार **दिनांक ३१ अगस्त २०२३ गुरुवार के दिन श्रावणी उपाकर्म पर्व, रक्षा बन्धन तथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस भी प्रान्त की सभी आर्य समाजें अवश्य आयोजित कर भव्य रूप सें प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में मनाएं** ।इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है । कार्यक्रम श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलकर निम्न प्रकार मनाया जाएगा । प्रातः ९.०० बजे आर्य समाज मन्दिर में नगर निवासियों को बड़ी संख्या में आमन्त्रित करके यज्ञादि किए जाएँ । उपाकर्म-कार्यक्रम के पश्चात् व्याख्यान आदि का विशेष प्रबन्ध किया जाए तथा उपस्थित सब भद्र पुरुष एवं देवियाँ सम्मिलित रूप से निम्न प्रकार मन्त्रों का पाठ करें ।

१) ओ३म् ऋतावान् ऋतजाता ऋकोवृधो घोरासो अनृतिद्‌वष । तेषां वसुम्ने सुच्छर्दिष्टिमें नमः स्याम वे च सूरयः ।।-ऋग्वेद ७,६६,१३

२) ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् । इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ -यजुर्वेद २, ५

३) ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो उप्तुरः कृण्वन्तो विस्वमार्यम् । अपघ्नन्तो अराव्णः ॥ ऋग्वेद १,६३,५

४) ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्या अस्मभ्य सन्तु पृथिवी प्रसूताः । दीर्घ न आयु प्रतिवुध्यमाना वयं तुभ्यं बलहृतः स्याम ॥ -ऋग्वेद १,६३,५

१) आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मंत्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़कर प्रार्थना कराएं । जो विद्वान् सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए, सत्य की निरन्तर वृद्धि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं उनके सुखदायक आश्रय से हम सब सदासुखी रहें और हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें ।

२) हे ज्ञानस्वरूप सब उत्तम संकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसको पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान कीजिए जिससे कि उस व्रत को ग्रहण करने से हमारी सब ओर से उन्नति हो । वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य को ही आचरण में लावें । आप हमें शक्ति दें ताकि हम अपने जीवन को पूर्ण सत्यमय बना सकें ।

३) हे मनुष्यों तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए कर्मनिष्ठ बनकर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी धर्मात्मा बनो और बनाओ ।

४) हे प्रिय मातृभूमि हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियाँ तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं । हम सर्वथा निरोगी, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए दीर्घ आयु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर हम अपने प्राणों की बलि देने को भी तत्पर रहें ।

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान ।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान ॥
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने ।
कष्ट अनेकों सहन किए पर धर्म न छोड़ा वीरों ने ॥
ऐसे सभी धर्मवीरों के, आगे हम अपना शीष झुकाते हैं ।
उनके गुण-कर्मों को हम, निज जीवन में अपनाते हैं ॥
अमर रहेगा नाम जगत् में, इन वीरों का विश्चय से ।
उनका स्मरण बनाएगा फिर, वीर जाति को निश्चय से ॥
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि-कोटि हों ऐसे वीर ।
देश धर्म हित खुशी-खुशी, जो प्राणों को अपने दे वीर ॥
जगतपिता को साक्षी रख कर, यही प्रतिज्ञा करते हैं ।
इन वीरों के चरण चिह्न पर,चलने का व्रत धरते हैं ॥
सर्व शक्तिमय दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बने ।
प्रर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बने ॥

धर्मवीर नामावली

श्यामलालजी, महादेवजी, रामाजी श्री परमानन्द ।
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणनन्द ॥
स्वामी सत्यानन्द महाशय, मलखना श्री वेदप्रकाश ।
धर्म प्रकाश, रामनाथजी, पाण्डुरंग, श्री शान्ति प्रकाश ॥
पुरुषोत्तमजी ज्ञानी, लक्ष्मणराव, सुनहरा वेंकटराव ।
भक्त अरोड़ा, नाथुरामजी, नन्हूसिंह, श्री गोविन्दराव ।
मदनसिंहजी, रतिरामजी, शिवचन्द्र, सदाशिव, ताराचन्द्र ।
श्रीयुत चोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द ॥
माणिकराव, भीमरावजी, महादेवजी, अर्जुनसिंह ।
सत्यनारायण, वैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह ॥
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का ।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही धीरों वीरों का ॥

भवदीय

वेंकट रघुरामुलु मंत्री सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना

विट्ठल राव आर्य प्रधान सभा

महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-95. फोन : 040-24753827, 24756983, 24760030.

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्न धातमम् ॥ १,१,१॥

पूर्ण रूप से हित करने वाले, यज्ञ के प्रकाश यज्ञ के प्रवर्तक, ऋतु के अनुसार यज्ञ करने वाले दिव्य विद्वानों एवं ज्ञानियों को अपने पास बुलाने वाले रत्नों के धारण कराने वाले तेजस्वी अग्रणी (नेता) के गुणों का वर्णन करता हूँ ।

वेद प्रचार सप्ताह

तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से श्रावण कृष्ण अमावास्या तक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्ष कि भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार सप्ताह तिथि श्रावण शुक्ल **विक्रम संवत 2080 श्रावण प्रतिपदा दि. 17 अगस्त 2023 गुरुवार अमावास्या से दि. 14 सितम्बर 2023** तक बड़े समारोहपूर्वक सभी आर्य समाजों में मनाने का निश्चय किया गया है। इसका उद्देश्य मानवमात्र की परम पवित्र सत्यसनातन धर्म पुस्तक ऋग, यजु, साम एवं अथर्ववेद का आशामय संदेश जनता तक पहुँचाना है जिससे जनता में वैदिक धर्म, आर्य-संस्कृति और आर्य सभ्यता की प्रगतिशील व्यवहारिकता के प्रति सक्रिय आकर्षण एवं रुचि उत्पन्न होकर वेदाध्ययन का प्रवचन, वैदिक जीवन का संचार तथा पवित्र वैदिक वातावरण का निर्माण हो सके। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि समस्त आर्यसमाजें कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करेंगें ।

कार्यक्रम

सप्ताह का आरम्भ श्रावण मास की प्रतिपदा से आरम्भ होता है । सप्ताह भर का कार्यक्रम निम्न प्रकार मनाया जाना चाहिए ।

१. श्रावणी-पर्व **दनांक 31 अगस्त 2023 गुरुवार के दिन** को मनाया जाए । प्रत्येक आर्य परिवार में उस दिन सूर्योदय के समय परिवारिक यज्ञ हो ।

२. पारिवारिक यज्ञ से निवृत्त होकर सब आर्य नर-नारी अपनी संतानों सहित 9-00 बजे आर्य समाज मन्दिर में उपस्थित हों । तत्पश्चात् आर्य पर्व पध्दति के पृ. 11 से 116 पर्यंत (तृतीय संस्करण संवत् 2041) लिखित तिथि से सम्पूर्ण पध्दति सम्पन्न कराई जाय। यज्ञ के पश्चात् वैदिक स्वाध्याय के महत्व पर किसी विद्वान का प्रवचन हो ।

३. यदि वेद प्रचार का प्रबन्ध न हो सके तो समस्त आर्य नर-नारी यजुर्वेद ४० वें अध्याय का मिलकर अर्थ सहित पाठ करें ।

४. उस दिन सब नर-नारी नूतन यज्ञोपवीत धारण करें जिन आर्य बालक-बालिकाओं का उपनयन नहीं हुआ हो तो इस पवित्र-पर्व पर उनका उपनयन संस्कार अवश्य सम्पन्न कराया जाय ।

५. प्रत्येक मनुष्य को विधिपूर्वक वेदाध्ययन करना चाहिए । इस दृष्टिकोण से प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने पड़ोस के अशिक्षित नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण करने की न केवल प्रेरणा दें अपितु आर्य समाज मन्दिर में अधिक -से-अधिक संख्या में उन्हे आमन्त्रित कर यज्ञोपवीत द्वारा उन्हे दीक्षित भी करे ।

सप्ताह के शेष दिनों में

प्रातः समाज मन्दिर में विशेष यज्ञ और वेद पाठ का आयोजन किया जाए ।

मध्याह्नः वेद प्रचार निधि में अधिक-से-अधिक धन इकट्ठा कर शीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें ।

रात्रि : समाज मन्दिर मे अन्य सार्वजनिक स्थानों में वेद कथाँए हो तथा आर्य समाज के नये सदस्य बनाए जाएँ। शुध्दि, दलितोध्दार, गौ-रक्षा एवं सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्या के सम्बन्ध में चर्चा कर कार्य किया जाए ।

ऋषि भक्तों से विशेष निवेदन

प्राचीन आर्य परम्परानुसार यह वेद के श्रवण-श्रावण का मास है यदि पूरे मास नहीं तो सप्ताह भर ही क्यों न हो, प्रत्येक आर्य गृहस्थ को प्रतिदिन प्रातः सायं घर में यज्ञ और वेदों में से चुने हुए कुछ मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन अग्नि रुप भगवान को साक्षी रखकर वेद धर्मानुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा करें । साथ ही वैदिक सिध्दान्तों के प्रचार का व्रत लें जिससे आड़ोस-पड़ोस के लोगों में वैदिक वातावरण का निर्माण हो ।

यह व्रत और दीक्षा का दिन है। इस दीक्षा में सबको विशेष रूप से कटिबध्द होकर इसको उन्नत करने के उचित साधनों का संग्रह करना चाहिए और अपनी सभा को वेद प्रचार के लिए धन की चिन्ता से सदैव मुक्त रखना चाहिए। इसी में सबका कल्याण है। आर्य पुरुषों उठो, जागो और वेद ज्योति को सारे संसार में फैला दो । आर्य जनो संभलो, भामाशाह की तरह अपने कर्तव्य को पहचानो और स्वयं तथा अन्यों से धन संग्रह करके शीघ्र सभा के कोष को भर दो । आर्य बन्धुओं मानव जीवन के अपने ऊपर चढ़े ऋण-बन्धनों को तोड़ने का यह उत्तम अवसर है । जाति की रक्षा का आप पर ऋण है और इस पवित्र दिन सब ऋणों से मुक्त होने का सक्रिय संकल्प कीजिए। आप पर सभा का भी ऋण है और इसे आपको ही उतारना है ।

सभा कार्यालय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा तेलुगु में आर्य-साहित्य उपलब्ध है। प्रत्येक आर्य को साहित्य खरीदना चाहिए तथा प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय में आर्य-साहित्य होना चाहिए ।

सभा की ओर से आर्य जीवन पाक्षिक का प्रकाशन हो रहा है । आप स्वयं ग्राहक बनकर, औरों को भी ग्राहक बनाये। सभा द्वारा प्रचारार्थ भेजे गये विद्वानों को मार्ग व्यय आदि से सम्मानित करके ही आप विदा करे ।

आशा है सदैव की भांति इस सभा के प्रति आपका स्नेह एवं सहयोग सदा बना रहेगा ।

भवदीय

वेंकट रघुरामुलु
मंत्री सभा

विट्ठल राव आर्य
प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र- तेलंगाना

महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद-95. फोन : 040-24753827, 24756983, 24760030.

आर्य समाज का मौलिक आधार

-स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

सर्वश्रेष्ठ अध्येताओं के अनुसार हिमालय के आस-पास ही मनुष्य का अवतरण हुआ है। वही से उसे संस्कृति का और मानवजाति की यात्रा का प्रारंभ होता है। वेद के दिव्य वाक्य मानवजाति के जीवन के आधार वने। कुछ काल प्रेम और आनन्द से रहने के वाद यहीं से मनुष्य समस्त संसार में बिखरें गए। नई परिस्थितियों ने मनुष्य जाति को नई भाषा, नए रीतिरिवाज और नए मानदण्डों से सम्पन्न कर दिया। ईसीलिए आज हम विविधता के संसार में निवास कर रहे हैं।

वदे समस्त मानवजाति की अटूट और अमूल्य निधि है। वैदिक ज्ञान के आलोक से समस्थ संसार आलोकित हो उठा। कालोपरान्त ज्ञान के इस अप्रतिहत प्रवाह में अनेक विषाक्त धाराओं का सम्मिश्रण हो गया और ज्ञान विज्ञान की पावन वैदिक धारा ऐसी बदली कि उसको पहचानना भी कठिन हो गया। वैदिक ज्ञान के पुनरुद्धार की आवश्यकता का अनुभव होने लगा। ऐसे संकटमय युग में स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने वैदिक ज्ञान की ज्योतिर्मय परम्परा को पुनर्जीवित किया।

१८७५ में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वम्वई में आर्य समाज की स्थापना कर धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति का शंख फूंक कर नवयुग का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द ने वेद पठन-पाठन का अधिकार सबको प्रदान किया। वेद की शिक्षाओं को समान रूप से सवके लिए उपादेय बताया। सन्निहित स्वार्थों के कारण भारत ही नहीं अनेक देशों में नए धार्मिक सम्प्रदाय बन गए। अनेकानेक मतमतान्तरों ने जन्म लिया। उनके अन्धविश्वासों पर स्वाम दयानन्द ने निर्ममतापूर्वक प्रहार किया। स्वामी जी ने धर्म के स्वाभाविक, सहज, सार्वभौम स्वरूप का परिचय कराया। मानव जाति की एकता एवं अखण्डता पर बल देते हुए उन्होंने मानवता के मंगलमय मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

परमात्मा

वेद का धर्म एकेश्वरवादी है। वेदानुसार परमेश्वर एक है अनेक नहीं। वह सनातन है और ज्ञान का शाश्वत् स्रोत है। वही परमेश्वर हमारा आश्रय है और सृष्टि का कर्त्ता है। वह दयालु तथा न्यायकारी है। वह निराकार तथा अजन्मा है। वह सत्, चित् एवं आनन्द है। ऐसा ही परमेश्वर मानने और पूजने योग्य है। परमेश्वर सम्वन्धी नाना अनर्गल धारणाओं से स्वामी दयानन्द ने हमें मुक्त किया। सत्यज्ञान से, सत्यनिष्ठ कार्य से, सेवाभाव से और योगाभ्यास से ही परमेश्वर की प्राप्ति सम्भव है, ऐसी उन्होंने उद्घोषणा की।

जीवात्मा

वैदिक धर्मानुसार जीवात्मा असंख्य हैं। प्रत्येक जीवात्मा अपने कर्मोंके लिए उत्तरदायी है। पशु-पक्षी भोग-योनियां हैं। मनुष्य ही एक-मात्र उभययोनि है। पशु-पक्षी सहजवृत्ति से अपना-जीवन यापन करते हैं। मनुष्य वुद्धि और विवेक से काम लेता है। जन्म-मरण का चक्र वृतिवत्-काल से चला रहा है। धूप-छांह की तरह सुख-दुख जीवन के साथ है, किन्तु मनुष्य परमेश्वर की शक्ति, परोपकार, सदाचार आदि के द्वारा मुक्ति की अवस्था को प्राप्त कर सकता है। मुक्तावस्था शाश्वत् नहीं है क्योंकि सान्त कर्मों का अनन्त फल कदापि नहीं हो सकता।

परमात्मा और जीवात्माएं पृथक सत्ताएं हैं। परमात्मा एक है और जीवात्माएं अनेक है। परमात्मा ज्ञान और आनन्द का स्रोत है परन्तु जीवात्माएं ज्ञान और आनन्द के लिए परमात्मा पर निर्भर है। परमात्मा सृष्टि का कर्त्ता और जीवात्मा भोक्ता है। परमात्मा अशरीरी और जीवात्मा शरीरी है। परमात्मा अजन्मा और जीवात्मा शरीर के माध्यम से जन्म-मरण के चक्र में आता जाता है। परमात्मा कर्माध्यक्ष है और जीवात्मा शुभाशुभ कर्मोंका कर्त्ता और नके फलों का भोक्ता है। परमात्मा सर्वदा-मुक्त है किन्तु जीवात्मा मुक्ति और वन्धन को प्राप्त होता रहता है।

प्रकृति

वैदिक सिद्धान्तानुसार परमात्मा तथा जीवात्मा के सदृश प्रकृति भी अनादि है। ये तीनों तत्व सदासे हैं और सदा रहेंगे। आद्य प्रकृति के सम्वन्ध में कुछ भी कहना अत्यन्त कठिन है। परमात्मा की शक्ति प्रकृति को नाना रूपों और नानारंगों में परिवर्तित कर सकती है। परमात्मा के तपस् से प्रकृति सृष्टि की संरचना करती है। अभाव से भाव की उत्पत्ति सम्भव नहीं है। विना प्रकृति के सृष्टि वन ही नहीं सकती।

परमात्मा सृजन द्वारा ही अपने आपको अभिव्यक्त करता है। सृष्टि अटल विशवत् नियमों पर आश्रित है। वैदिक सिद्धान्तानुसार प्रकृति सत् एवं उद्देश्य पूर्व है। सृष्टि में नियम, व्यवस्था तथा उद्देश्य से परमात्मा की महिमा का दर्शन होता है। सृष्टि का सृजन, संहार निरन्तर चलता रहता है। इस सृष्टि से परमात्मा अहर्निश कर्म में लगा रहता है।

जीवन

परमात्मा सर्वोच्च नैतिक आदर्शों एवं मूल्यों का साकार रूप है। वैदिक परमात्मा

एक अर्थ में नैतिक परमात्मा है । सत्य और दया का मूर्तिमान् रूप है । नैतिक-आदर्श नाना रूपों में अभिव्यक्त होते हैं । "परमात्मा की रची सृष्टि का ज्ञान प्राप्त करो, उस ज्ञान से मानव-जाति को सम्पन्न करो" यह हमारे जीवन का उद्देश्य है । सत्य अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि नैतिक मूल्यों के अभाव में जीवन का वैभव निस्तेज और निष्प्राण हो जाता है । साधना, स्वाध्याय और सत्पुरुषों का संग, उपासना आदि द्वारा नैतिक आदर्श को जीवन में उतारना सम्भव है, अन्यथा नहीं ।

वेदानुसार सर्वोच्च नैतिक सत्ता है-परमात्मा । एतदर्थ परमात्मा की प्रार्थना-वैदिक उपासना पद्धति का अविभाज्य अंग है । परमात्मा को स्तुति-प्रार्थना उपासना की किञ्चित भी आवश्यकता नहीं है । स्तुति-प्रार्थना-उपासना से जीवात्मा परमशुद्धता को प्राप्त होकर सत्कर्मों को करने की सामर्थ्य से सम्पन्न हो जाता है । स्तुति में हम परमात्मा के गुणों की परिगणना करते हैं, जैसे-दयालुता, न्यायकारिता आदि । प्रार्थना में हम परमात्मा से विनम्र मांग करते हैं कि ये समस्त गुण हमारे जीवन में आ जावें । उपासना के द्वारा परमात्मा की समीपता से नया तेज, नया ओज, नया जीवन उपलब्ध होता है । जीवात्मा स्वपुरुषार्थ से ही परमात्मा की ओर अग्रसर हो सकता है । जीवात्मा और परमात्मा के बीच किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं ।

समाज

मनुष्य समाज में रहता हैं । समाज में ही जन्मता और बढ़ता है । समाज से ही वह भाषा और संस्कृति भी पाता है । इस नाते समाज के प्रति इसका जो दायित्व है उससे वह मुँह नहीं मोड़ सकता । ईश्वरीय प्रेम का एक अर्थ समाज की निष्काम सेवा करना भी है । वर्णाश्रम व्यवस्था भी मनुष्य को अधिकारों के स्थान पर कर्त्तव्यों पर अधिक बल देती है । जब समाज कर्त्तव्यों की उपेक्षा कर अधिकारासक्त होता है, तब अव्यवस्था का साम्राज्य स्थापित हो जाता है । किशी भी समाजोपयोगी कार्य को हीन या अधम नहीं मानना चाहिए । कार्यों की गुरुता तथा प्रकृति भिन्न होते हुए भी उसका आध्यात्मिक मूल्य एक-समान है । निष्ठा एवं सत्यता-सम्पन्न प्रत्येक कर्म मनुष्य को मुक्ति की ओर ले जाता है । कमजोर वर्ग की सहायता करना और उनकी उन्नति के लिए अवसर प्रदान करना, समाज में शान्ति एवं व्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है, 'केवल शक्तिशाली को ही जीने का अधिकार है' ऐसा मानना सामाजिक सामञ्जस्य के सिद्धान्त पर निर्मम प्रहार है । स्वामी दयानन्द स्वतन्त्रता के साथ-साथ "सर्व-हितकारी" शब्द का पुनः-पुनः प्रयोग करते हैं, क्योंकि स्वच्छन्दता सर्वनाश की जननी है ।

सभी समाजों में कर्मकाण्ड का प्रचलन होना आवश्यक है । वैदिक धर्म में जीवन-निर्माणकारी सोलह संस्कारों का अनुपालन जीवन की सत्ता एवं महत्ता के वैदिक आदर्श के अनुसार जीवन का अन्तिम उद्देश्य पाने में परम सहायक है । आर्य समाज की मान्यताओं और आस्थाओं के बारे में सार रूप में यह कह दिया गया है कि जीवन के ये आधारभूत सिद्धान्त अखिल मानव-जाति के लिए समान रूप से उपयोगी हैं । हम सभी "अमृत-पुत्र", "पृथिवी-पुत्र" हैं । मानव जाति का मंगल करने वाले सभी विचारक, आचार्य, चिन्तक समान रूप से हमारे लिए आराध्य हैं ।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना द्वारा मानव महिमा का महादान कर मानव को दिव्य गरिमायुक्त करने का महत् प्रयत्न किया । पीड़ित प्रताड़ित मानवता का आह्वान किया और अपने प्रबल उद्‌बोधन से मानवता को प्रगति पथ पर अग्रसर किया ।

विज्ञान

मैं आजीवन एक ही सूत्र का प्रचार करता चला आ रहा हूँ वह सार सूत्र है:-

'Rationalize your religion Spiritualize your science'-

धर्म को बौद्धिकता और विज्ञान को आध्यात्मिकता का आधार दो । आर्य समाज का यही मौलिक आधार है । इसी में मनुष्य जाति का मंगल है । विज्ञान ने हमें दैत्याकार शक्तियों का स्वामी बना दिया है । यदि हमने भीतरी आत्मिक शक्ति का विकास नहीं किया तो विज्ञान हमें महाविनाश की ओर ले जाएगा । इसमें सन्देह नहीं कि विज्ञान ने अनेक तथ्यों को समझने में हमारी सहायता की है और अन्धविश्वासों से छुड़ाया है । नई सम्पन्नताएं भी दीं । विज्ञान नए सृजन का नाम भी हो सकता है और संहार का भी । विज्ञान संसार को स्वर्ग भी बना सकता है और नरक भी । धर्माधारित विज्ञान से ही मनुष्य का कल्याण अवश्य सिद्ध होगा ।

अज्ञान और अन्धविश्वास पूरित धर्म-अधर्म ही है । ऐसा धर्म जीवन को दुःख प्रदान करता है । हमें आज के बुद्धिवादी युग में धर्म को तर्क संगत आधार देने होंगे । बुद्धि का दीपक लेकर हमें धर्म क्षेत्र में भी उतरना होगा । यदि मनुष्य को जीवित रहना है तो विज्ञान को अध्यात्म पर अधिष्ठित करना होगा और धर्म को तर्कसंगत आधार देना होगा ।

परम मंगलमय शक्ति के सम्मुख विनम्रता का भाव अपनाकर निरन्तर सत्यान्वेषण में लगे रहकर मनुष्य जाति के कल्याण के लिए निष्काम भाव से कार्यरत रहें, यही वैदिक धर्म का आदर्श और उद्देश्य है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी ।

श्रावणी पर्व एवं रक्षाबंधन का संदेश

-राकेश रानी "साहित्य रत्न"

श्रावणी का पावन पर्व सदा से ही अत्यधिक महत्व का रहा है । विशेषतया सांस्कृतिक रूप से बहनों के लिए, यह दिन स्मरणीय झलक उपस्थित कर देता है । अब आर्य समाज इसे वेद प्रचार सप्ताह के प्रथम दिवस के रूप में मनाता है ।

मुझे इस दिन की गौरव गरिमा की व्याख्या में कुछ अधिक नहीं कहना ! इस दिवस की सार्थकता के लिए कुछ कहना चाह रही हूं ।

यह सत्य है कि युग निर्माण में नारी का महत्वपूर्ण हाथ सदा ही रहा है । परिवार की इकाई की संचलिका नारी है, और साथ ही विश्व साम्राज्य की मूल प्रेरणा भी नारी ही है । नारी के उत्थान और पतन की श्रृंखलाओं के पीछे विश्व, का उत्थान और पतन छिपा हुआ है । और जितनी जल्दी सभी इस तथ्य को समझ, स्वीकार कर लें, उतना ही कल्याण है ।

आज समस्या यह नहीं है कि नारी उठे तो किस तरह ? अपितु समस्या यह है कि नारी उठ कर किस मार्ग पर चले ? आज बहनों का एक बड़ा भाग उन की भाषा में जागरूक है और वह वहुत कुछ अधिकारों की मांग में पुरुषों से भी आगे हैं । पर क्या यह प्रगति पथ, नारी के कल्याण का परिचायक है ? विश्व की शांति का आधार है ? यह समस्या है ।

समस्याओं की उलझनों न उलझते हुए आइए ! हम यह विचार करें कि क्या यह अधिकारों की मांग, शरीर को सजाने की भूख, लौकिक मायावाद का संग्रह विश्व की नारी को अपने महान गौरवमय पद पर पहुँचा सकेगा ? सोचिए । और बहुत सोचने के बाद भी हमें यदी कहना पड़ता है कि वर्तमान दौड़ प्रकाश की ओर, नहीं अपितु अन्धकार की ओर है ।

नारी की साधना और कामना दोनों का अन्त जब मास्तिष्क और हृदय से दूर होकर, शरीर बन जाता है तभी उसका पतन प्रारम्भ हो जाता है । नारी की महानता प्रेरणा देने में है, प्रेरणा लेने में नहीं । वह प्रकाश प्रदान करती है । हृदय से उल्लास बिखेरती है । निराशा में आशा की तरंगें उत्पन्न करती है । और वदले में चाहती है दूसरे का हृदय और प्यार । किन्तु परिवर्तन में वह भावों की पिटारी देती है, देना चाहती है शरीर का भोजन नहीं । यही नारी की मनोवैज्ञानिक विशेषता है ।

किन्तु आज धारा दूसरी ओर बह रही है, आज युग ने नारी को खिलौना बना रक्खा है । उसे सजा कर रक्खा जाता है, इसलिए कि वह उनकी पशुता में सहयोगिनी वन सके । और इसी वहाव में बहती नारी आज हृदय से करुणा, ममता, स्नेह के अमर धन को खोती जा रही है । और पुरुष जाति अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए नारी को गिराने में उन्नति करती जा रही है । किन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि इस प्रकार मानव जाति के विनाश के जो बीज बोए जा रहे हैं । उनका परिणाम सभी के लिए भयंकर होगा । यह निश्चित है ।

आज रक्षावन्धन है । बहनें भाई को राखी बांधती हैं और आज इस दिन मैं आंखें फाड़ २ कर, हाथ में राखी के धागे लिए हुए, चारों ओर अपने भाइयों को खोज रही हूं, जिनके हाथों में मैं यह राखी बांध सकूँ । राखी के धागे मेरे हाथों में कांप रहे है और मैं यह सोच रही हूं कि क्या यह मेरा "त्यौहार" सूना ही चला जाएगा ? मेरे इन धागों को स्वीकार करना आसान नहीं है । अपने कर में इन को बंधवाने से पहिले प्रण करना होगा कि-

१-मैं आज से नारी चित्रों का अश्लील प्रदर्शन रोकने के लिए प्रयत्नशील रहूंगा ।

२-जो समाचार पत्र अपने पत्रों में इस प्रकार के गन्दे चित्र छाप कर मां बहनों का अपमान करते हैं उनके इस कार्य को बन्द करने के लिए प्रत्येक सम्भव पग उठाऊंगा ।

३-जो अज्ञान, मूर्तिपूजा, कुविचार और विपैली भावनाएं आज बढ़ती जा रही हैं इन्हें मिटाने के लिए मैं अपना जीवन लगा दूंगा ।

मैं धन नहीं चाहती, वातें और प्रशंसा भी नहीं चाहिएं । राखी के धागों के बदले यह तीन प्रतिज्ञाएं करवाना चाहती हूँ क्या कोई भाई इन राखी के धागों को बंधवाने का साहस करेगा ।

बहनों से कहना है कि वे अपनी राह बदलें और आज दो संकल्प करें । पहला यह कि "हम अपने जीवन को त्याग तपस्या और सादगी पर आधारित कर उन्नति करने का प्रयत्न करेंगी ।" दूसरा यह कि "आज से प्रतिदिन हम वेद के मंत्रों का स्वाध्याय करेंगी" और स्वाध्याय करते हुए जो उत्तम विचार हमारे हृदय में उत्पन्न होंगे उन पर आचरण करने के लिए सदा दृढ़ रहेंगी ।

नारी महान थी, है, और रहेगी । पर उसकी महानता, फैशन, बनावट और थिरकन में नहीं, त्याग, गम्भीरता और प्रेम में है । वह धरती के हर प्राणी को पुत्र और भाई समझ प्यार करे । सभी के दुःख में अपना दुःख अनुभव करे । सभी के सुख में सुखी हो कर हर्षित हो । इसी में उसका उत्कर्ष छिपा हुआ है । वह अपने उत्कर्ष को देख उसे पाने के लिए प्रयत्नशील हो यही आज के पर्व का संदेश है ।

ఆర్య సమాజము పోరాట ఘట్టాలు మరియు జనజాగృతి

-పం. నరేంద్ర జీ

సంఘటన ఏర్పాటు దిశలో :- హైదరాబాద్ రాజ్యంలో ఆర్య సమాజము యొక్క కార్యకలాపాలు అధికంగా వ్యాపించాలంటే ఒక కేంద్రీయ సభను ఏర్పాటు చేయాలని నిర్ణయించి కేంద్రీయ సభయైన ఆర్య ప్రతినిధి సభను స్థాపించడము జరిగినది. మొదట దీనిపై సుల్తాన్ బజారు మూడవ వార్షికోత్సవము మార్చి 1930 నాడు చర్చ జరిగినది. ఈ సభలో ఆర్యసమాజ ప్రతినిధులను ఆహ్వానించారు. ఒక కేంద్రీయ సంస్థ స్థాపనకు నిర్ణయించిరి. సుల్తాన్ బజారు యొక్క మంత్రి శ్రీ చందూలాల్ గారు ఈ తీర్మానమును ప్రతిపాదించిరి. శ్రీ బన్సీలాల్ వకీల్ (హళ్ళిఖేడ్) దీనిని సమర్థించారు. కాని దీని గురించి ఏ నిర్ణయం తీసుకోలేదు. 4 ఏప్రిల్ 1931న ఆర్య సమాజ్ సుల్తాన్ బజారు యొక్క 37వ వార్షిక సభలో ఈ ప్రశ్న గురించి మళ్ళీ ఆలోచించడం జరిగింది. ఇందులో 69 మంది ఆర్య ప్రతినిధులుండిరి. ఇందులో ఆర్య ప్రతినిధి సభస్థాపనకు సంబంధించి సర్వ సమ్మతితో తీర్మాణము స్వీకరించబడినది.

ఆర్య ప్రతినిధి సభ :- ఆర్య సమాజ్ సుల్తాన్ బజార్ యొక్క మంత్రి శ్రీ చందూలాల్, సోదరుడు బన్సీలాల్ గారి సలహాతో 4 ఏప్రిల్ 1931న ఆర్య ప్రతినిధి సభ నిజామ్ రాజ్యము యొక్క స్థాపన జరిగినది. దీని మొదటి అధ్యక్షుడు పం. కేశవ్‌రావ్ గారు మంత్రి శ్రీ చందూలాల్ గారు, పం. వినాయక్‌రావు విద్యాలంకార్ గారు కోశాధ్యక్షులుగా ఎన్నుకోబడ్డారు.

ఆర్య సమాజ్ సుల్తాన్ బజార్ 1892 నుండి నిరంతరం పనులు చేస్తుండెడిది. ఇది హైదరాబాద్ రాజ్యంలో ఒక కేంద్రంగా ఏర్పడి ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఏర్పడినది.

పం. కేశవ్‌రావ్ గారి మరణము తరువాత ఆర్య సమాజానికి కొంత నష్టం జరిగింది. ఎందుకనగా శ్రీ కేశవరావు గారు, హైదరాబాద్‌లో ప్రముఖ సమాజ సంస్కర్తగా ఉన్నతమైన న్యాయమూర్తిలలో ఒకరుగా ఉండిరి. 23 జనవరి 1932న పం. వినాయక్‌రావు విద్యాలంకార్ అధ్యక్షులుగా, శ్రీ చందూలాల్ మంత్రిగా ఎన్నుకోబడ్డారు. నిజాం హైదరాబాద్ రాజ్యము పరిపాలన అత్యాచారాముతో కూడిన పరిపాలన. అత్యాచారము నుండి విముక్తి కొరకై ఆర్య సమాజీయులు కృషి చేయవలసి వచ్చినది. ఆర్య సమాజ ప్రచారకులు, వక్తలు ఆర్య సమాజ ఊరేగింపులకు ఏర్పాటు చేస్తూండేవారు. ఉదాహరణముగా 12 ఏప్రిల్ 1934న సమాజ మందిరములో ఏ ఉపదేశాలు జరుగకూడదని ఒకవేళ సమాజములో ఉపదేశ సభను జరుపవలసి వచ్చినచో దానికి ముందుగా ప్రభుత్వము దగ్గరకు పంపించి అనుమతి పొందాలని నిజాం ప్రభుత్వము ఆదేశ పత్రము వెలువరించింది.

ఇదే విధంగా 13 జనవరి 1934 నాడు మరియు 23 ఏప్రిల్ 1934న ఇంకొక ఆజ్ఞా పత్రం వెలువడింది. సమాజ మందిరము బయట హోమము మరియు సార్వజనిక సభలు జరుపరాదు. ఇతర మతాల మాదిరిగానే ఆర్య సమాజమునకు ధార్మిక, సామాజిక స్వతంత్రతను ఇవ్వమని సార్వదేశిక సభ తరపున నిజాం ప్రభుత్వముతో ఆర్య సమాజము కోరినది. ప్రభుత్వము వారు జారీ చేసిన ఆదేశ పత్రమునకు వ్యతిరేకంగా ఒక వినతి పత్రాన్ని కూడా నిజాం రాజుకు సమర్పించారు. ఈ వినతిని నిజాం రాజ్యము వ్యతిరేకించింది. ఆర్య సమాజ కార్యకలాపాలలో జోక్యము కల్పించుకుని దౌర్జన్యాలు జరుపమని పోలీసులకు ఆదేశాలు ఇవ్వబడ్డాయి.

హైదరాబాద్ దినము :- పోలీసుల దౌర్జన్యాలు హైదరాబాద్ మరియు భారత దేశంలోని ఆర్య సమాజీయులకు మనశ్శాంతి లేకుండా పోయింది. ఈ బాధను ప్రభుత్వానికి అవగతమవ్వడానికి రాజ్యములో మరియు రాజ్యము బయట 2 డిసెంబర్, 1934న హైదరాబాద్ దినంగా అతి ఉత్సాహముగా జరిపారు. సార్వదేశిక సభ ద్వారా ఏడు విన్నపాలను పంపించడం జరిగినది.

మొట్టమొదటి వార్తా పత్రిక :- భారతదేశంలో అనేక ప్రాంతాలలో ఆర్య సమాజము యొక్క వార్తా పత్రికలు ప్రచురింపబడేవి. కాని హైదరాబాద్‌లో ఆర్య సమాజ పత్రిక ఒక్కటి కూడా వెలువడలేదు. పత్రిక ప్రచురించటానికి నిజాం ప్రభుత్వము అనుమతి ఇవ్వలేదు. నిరంతర ప్రయత్నాల ఫలితంగా సమాజ వార్త పత్రిక వెలువడుటకు అనుమతి లభించినది. ఫలితంగా 7 డిసెంబర్, 1934 నుండి "వైదిక ఆదర్శ్" వెలువడటం ప్రారంభమైనది. దీని సంపాదకులు శ్రీ చందూలాల్ గారుండిరి ఈ పత్రికను ప్రచురించే సంపూర్ణ బాధ్యత నాకివ్వడం జరిగినది. శ్రీ సోహన్‌లాల్ గారు, శ్రీ ఠాకూర్ ఉమరావు సింహ గారు ఈ పత్రిక వెలువడుటకు పూర్తి సహకారాన్ని అందించారు. దురదృష్టవశాత్తు ధృవపేట్ యొక్క పోట్లాట సమయంలో వారు పట్టుకోబడ్డారు. వారికి కేసులో శిక్ష విధించబడ్డది.

నిజామ్ ప్రభుత్వము ఆర్య సమాజ పత్రికపై గట్టి నిఘావేసి ఉంచినది. మహ్మదీయుల తరపున వెలువడే పత్రికలో ఆర్య సమాజీయుల, హిందువుల ధార్మిక అభిప్రాయాలపై బురద చల్లేవారు.

వైదిక ఆదర్శము మరియు మహామ్మదీయ పత్రికలు :- "వైదిక ఆదర్శ" పత్రిక మహమ్మదీయుల పత్రికలకు ఆటంకము కలిగించేదిగా మారినది. నమాచార పత్రిక లోపాన్ని అధిగమించుట కొరకు హళ్ళిఖేడ్ వార్షికోత్సవ సమయమున పం. వినాయక్ రావు విద్యాలంకార్ గారు గారు, పం. రామచంద్ర దెహల్వీ గారు, శ్రీ చందూలాల్ గారు, శ్రీ చందూలాల్ గారు, శ్రీ సూర్యప్రతాప్ గారు, శ్రీ చంద్రపాల్ గారు పం. దత్తాత్రేయ ప్రసాద్ గారు, శ్రీ బన్సీలాల్ గారు మొదలగు వారు ఉర్దూలో "వైదిక్ ఆదర్శ్" సాప్తాహిక పత్రికను వెలువరించాలని నిర్ణయించారు. వారాపత్రికను అత్యంత ధైర్య సాహసాలతో నడిపించుచుండిరి. "రహబరేదక్కన్ ఆల్ ఆజమె" అనే పత్రికలో హిందువులకు బాధ కల్గించేటట్లు వార్తలు వ్రాసేవారు. దీనికి విరుద్ధంగా ఒక్క పత్రిక కూడ లేకుండినది. ఈ పత్రికకు వ్యతిరేకంగా "వైదిక ఆదర్శ" అనే పత్రికను వెలువరించారు 1934లో హళ్ళిఖేడ్ కేసులో బ్రిటిష్ ప్రభుత్వము సెక్షన్ (236, 83, 143) ప్రకారము పం. రామచంద్ర దెహెల్వీ గారికి వ్యతిరేకముగా కేసు నడుస్తున్నప్పుడు "వైదిక ఆదర్శ" పత్రిక నిర్భయముగా వాస్తవాన్ని ప్రచురించి ఈ నేతలపై కేసు పెట్టడము చట్ట

బద్ధము కాదని ప్రభుత్వానికి విన్నవించుకున్నది.

"రహబరే దక్కన్" దైనిక పత్రికను నడిపించే యాజమాన్యము మతచ్ఛాంధస ప్రచారానికి పూనుకొని, వైదిక ఆదర్శ పత్రికకు విరుద్ధంగా కేసు పెట్టారు. సుబహే దక్కన్ దైనిక ఆసఫియా పత్రిక ఉదారతను చాటిస్తూ వాదించారు. ముస్లిం సంపాదకుల నిందతో కూడిన ప్రశ్నలకు "వైదిక ఆదర్శ" అత్యంత గంభీరముగా జవాబునిచ్చింది. పం. రామచంద్ర దెహెల్వీ గారు వేదము ఒక ఈశ్వరీయ గ్రంథము. ఇది సూర్యుడి లాంటిది అని దీనికి ఏది సాటిలేదని అన్నారు. అంటే అర్థమేమనగా వేదము ఇతర మతాల గ్రంథాలు దీనికి సాటి రాదు. వేదము లాంటి పవిత్ర పుస్తకము లేదన్నట్లు అని కొంతమంది మహమ్మదీయులు వాదించారు.

ఇంతేకాక స్థానిక ఉర్దూ సమాచార ఏజన్సీ, దక్కన్ న్యూస్ ముస్లీం మతవాదుల ప్రచారమునకు అత్యధిక సహకారాన్నందించింది. ఈ సమాచారాన్ని మూలమూలలో వ్యాపింపజేయుటకు ప్రయత్నము చేసినాయి. దక్కన్ న్యూస్ ఈ విధంగా ప్రచారము చేయడం మంచిది కాదని రాజ్యాధ్యక్షుడు "అక్బర్ హైదరీ" ఆదేశాలివ్వడంతో ఆపివేయడము జరిగింది.

"వైదిక ఆదర్శ పత్రిక" ఆర్య సమాజము యొక్క ఉద్దేశను అనుసరించి శాంతి, ప్రేమ, మిత్రత, సత్యము మరియు యదార్థములను ప్రకటిస్తూ నడుస్తున్న పత్రిక.

క్రాంతికై ముందడుగు :- ఆర్య సమాజము వారు హిందూ సమాజాన్ని సంస్కరించుటకు, నిమ్న-ఉన్నత వర్గాల మధ్య ఉన్న బేధభావాల్ని తొలగించుటకు ప్రయత్నించారు. ఆచరణలో కూడ పెట్టడము జరిగినది. పం. గణపత్ శాస్త్రి గారు నిస్వార్థ బ్రాహ్మణుడు అయినప్పటికి అతడు హరిజన యువతి అయిన శాంతదేవిని వివాహమాడెను. అందరూ అతన్ని ప్రశంసించారు. వివాహమాడి ఆయన భావితరానికి, యువకులకు ప్రేరణగా నిలిచారు. శ్రీమతి శాంతిదేవి గారు కూడ శ్రీ గణపత్ శాస్త్రి గారికి అనుకూలంగా ఉండి సహకారాన్నందించినది.

ఫక్రయార్ జంగ్ ఉపన్యాసము :- 6 నవంబర్ 1934న సమాజ ఉత్సవములో అనేక వక్తలతో పాటు నిజాం ప్రభుత్వము యొక్క ఆర్థిక మంత్రి ఫక్రయారజంగ్ ఉపన్యాసమిచ్చారు. ఎప్పుడైతే ప్రపంచములో అన్యాయం పెరుగునో ఒక మహాత్ముడు జన్మిస్తాడు. ఎందుకనగా అన్యాయాన్ని ఎదుర్కొనుటకు మరియు మంచిని, సత్యమును, ప్రేమను పెంచుటకు మరియు శాంతి మార్గములో పయనించేటట్లు చేయుట కొరకు ఒక మహాత్ముడు వస్తాడు అదే విధంగాస్వామి దయానంద సరస్వతి అన్యాయాన్ని నాశనము చేయుట కొచ్చారని అన్నారు.

ధార్మిక ప్రచార సభలపైనిషేధం :- ఆర్య సమాజములతో పోలీసులు ఏ విధంగా వ్యవహరించేవారో ఈ సంఘటన ద్వారా తెలుస్తుంది. స్వామి కర్మానంద గారు, శ్రీ శ్యామ్ లాల్, పం. బన్సిలాల్ గారితో చిటగోప్పలో ప్రచార నిమిత్తమై వెళ్ళారు. అక్కడ గ్రామాధికారి ఉపన్యాసమివ్వ వద్దని అన్నారు.

పం. బన్సిలాల్ గారు పూర్తి ధైర్య సాహసాలతో వైదిక ధర్మ ప్రచారం మా హక్కు నని దీనిపై ఎవరు ప్రతిబంధకాలేర్పరచలేరని తమ ఉపన్యాసములను ఇస్తూ ప్రజలను జాగృతము చేయడం ప్రారంభించారు. వీరి ఉపన్యాసములను వినుటకు వేల సంఖ్యలో ప్రజలు వచ్చేవారు. అంతిమ దినమున సన్మానము చేసి ఆర్య నేతలకు వీడ్కోలు ఇచ్చారు.

చిటగోప్పలో ప్రయాణాన్ని ముగించి పం. బన్సిలాల్ గారు, వారి వియ్యంకుడు నీలంగా చేరారు. అక్కడి ఇన్‌స్పెక్టర్ ఉపన్యాసమివ్వడానికి ముందు న్యాయస్థానం నుండి అనుమతి పొందాలనే షరతును విధించారు. సమాజములో ఉపన్యాసమివ్వడము, ప్రచారము చేయడము, మనకు జన్మతః లభించిన అధికారము కావున ఇందులో జోక్యము చేసుకోవలసిన అవసరము లేదని పండితులు అన్నారు. అక్కడ తమతోటి వారితో విజయవంతంగా ప్రచారము కొనసాగిరి.

ఈ రోజుల్లోనే హళ్ళిఖేడ్‌లో బన్సిలాల్ గారు రామవల్లబ్ గారు, శ్రీ మాణిక్‌రావు గారు మరియు ఇతర ఆర్య సమాజీయులపై అబద్ధమైన ఆరోపణలు చేస్తు, న్యాయస్థానములో దాఖలైన ఫిర్యాదుపై వీరందరికి కోర్టు జురు మానా మరియు జైలు శిక్షను విధించారు.

సత్సంగములపై నిషేధ ఆజ్ఞ :- ఇదే సంవత్సరము ఆర్య సమాజ్-కిషన్‌గంజ్ యొక్క సత్సంగములో శ్రీ కిషన్‌రావు వకీల్ గారు ఉపన్యసించాల్సి ఉండినది. ప్రభుత్వ ఆదేశానుసారము పోలీసులు సత్సంగమును రద్దుచేసిరి. దీనివల్ల అశాంతి చెలరేగింది కాని మరుసటి రోజు వీరు ఉపన్యసించడము జరిగింది. ప్రభుత్వ ఆదేశానికి విరుద్ధముగా ఉపన్యాసమిచ్చినందున వీరికి 100/- రూపాయల జురుమాన మరియు జైలు శిక్షను విధించారు.

శ్రీ నాగభూషణము గారు "ఆర్య సమాజ్ మాదన్నపేట్‌లో ప్రచారము ద్వారా ఇరుమతాలలో శాంతిని భంగపరిచారన్న ఆరోపణపై పోలీసులు మీర్ షాదత్ అలి ఖాం. న్యాయమూర్తి ముందు వీరి వలన శాంతికి భంగం వాటిల్లిందని వాదించెను. న్యాయమూర్తి నిర్ణయముతో ఒక ఆర్య సమాజీయుడని 5 సంవత్సరముల జైలు శిక్షను విధించెను.

ఇదే విధంగా "జాల్నా ఆర్య సమాజ్" యొక్క మంత్రి శ్రీ మంగిలాల్ గారి విరుద్ధంగా 64 ఆసఫియా చట్టము క్రింద కోర్టులో కేసు వేయడము జరిగింది. ఆజ్ఞ లేకుండా శ్రీ గోపినాథ్ దేవాలయములో ధర్మోపదేశాన్ని ఇవ్వడం జరిగిందనే ఆరోపణతో మూడు నెలలు శిక్ష వేసారు.

ఆర్య సమాజ్ సుల్తాన్ బజార్‌సాప్తాహిక సత్సంగములో "ఖురాన్ తజల్లీ-ఎ-వేద" అనే శీర్షికతో ఉపన్యాసము ఇవ్వడము జరిగినది. ఈ ఉపదేశము మహమ్మదీయుల ధార్మిక ఆలోచనలకు, ధర్మానికి విరుద్ధంగా ఉందని నాపై కేసు వేశారు. ఆరు నెలల కారాగార శిక్ష విధించారు. స్వర్గీయ పం. వినాయక్ రావ్ గారు హైకోర్టులో అప్పీలు చేశారు. కాని హైకోర్టు కూడ ఆ శిక్ష సరియైనదేనని భావించినది. హైకోర్టు ద్వారా కూడా నాకు శిక్ష విధించడము జరిగినది. ఈ శిక్ష అనుభవిస్తున్న పదిహేను రోజుల తర్వాత మరొక నేరము మోపబడింది. అదేమిటనగా హైదరాబాద్ ప్రభుత్వము ఏ పత్రికలనైతే నిషేధించినదో ఆ పత్రికలు నా దగ్గర ఉన్నాయనే ఆరోపణతో 27వ తేదిన నాపై కేసు వేయడము జరిగినది. ఒక నెల కారాగార శిక్ష విధించారు.

నిజాం రాజ్యంలో ఆర్య సమాజ్ కార్యకర్తలైన ముఖ్యంగా భాయి బన్సీలాల్, భాయి శ్యామ్‌లాల్‌పై ప్రభుత్వము ఏదో ఒక సాకుతో కేసు వేస్తూ ఉండేవారు. మేము నిజాం ప్రభుత్వము యొక్క ప్రతి ఆత్యాచారమును, అన్యాయాన్ని ఎప్పటికప్పుడు ప్రతిఘటిస్తూ ఉండేవారము. ఆర్య సమాజము పోలీసులు మోపిన అబద్ధపు కేసులపై ఆందోళన ప్రారంభించినది. ఫలితంగా పోలీసులు తమ అభియోగాలన్నింటిని తిరిగి వెనక్కి తీసుకోడమైనది.

Estd. 1931 Reg. No. 6/52 Fasli (old) 1342/84 (New)

|| ओ३म् ||

मा निन्दत - निन्दा मत करो (ऋ ४-५-२)

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.
तेलंगाना, हैदराबाद
म.नं. ४-२-६५, महर्षि दयानंद मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०० ०९५.

ARYA PRATINIDHI SABHA A.P.
TELANGANA, HYDERABAD

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.
తెలంగాణ, హైదరాబాద్

నెం. : 406263/2023

తేది : 31-07-2023

శ్రావణి వేద ప్రచార కార్యక్రమము

సేవలో

శ్రీమాన్ ప్రధాన్ గారు / మంత్రి గారు

ఆర్య సమాజము ....

ఆర్య,

ప్రతి సంవత్సరము వలె ఈ సంవత్సరము కూడా విక్రమ నామ సంవత్సరం 2080 శ్రావణ శుక్ల పాడ్యమి తేది 17-08-2023 గురువారము నుండి నిజ శ్రావణ మాస అమావాస్య తేది 14-09-2023 గురువారము వరకు నెల రోజులంతా సాంప్రదాయానుసారము శ్రావణి వేద ప్రచార కార్యక్రమము ప్రాంత విద్వాంసుల సహకారముతో తమ తమ ఆర్య సమాజములలో ఉత్సాహముగా జరుపుకోవలెను. ఈ సంవత్సరము అన్ని ఆర్య సమాజములు ప్రాంత విద్వాంసుల సహకారముతో ఒక వారం రోజులు లేక మూడు రోజుల పర్యంతము కార్యక్రమమును ఏర్పాటు చేసుకొని బృహద్ యజ్ఞము, భజనోపదేశము మరియు వేదోపదేశ కార్యక్రమములను నిర్వహించవలెను. శ్రావణి కార్యక్రమమును నిర్వహించి, గ్రామము లేదా నగర మహానుభావులను మరియు ప్రతిష్ఠిత కుటుంబములను ఆహ్వానించి శ్రావణి పర్వయజ్ఞమును అత్యంత వైభవముగా నిర్వహించవలెను. ప్రాంతీయ సమాజములన్ని తమ తమ సౌకర్యానుసారము శ్రావణి వేద ప్రచార కార్యక్రమమును తప్పక నిర్వహించవలెను.

తేది 31-08-2023 గురువారము నాడు శ్రావణ పూర్ణిమ నాడు శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వదినమును, రక్షాబంధన పర్వమును మరియు హైదరాబాద్ ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినమును ప్రాంతములోగల అన్ని ఆర్య సమాజములు అత్యంత భవ్యముగా నిర్వహించవలెను. శ్రావణ పౌర్ణమి నాడు పర్వ యజ్ఞమును నిర్వహించి నూతన యజ్ఞోపవీత ధారణ గావించవలెను మరియు ఇతరులతో కూడా చేయించవలెను.

ఈ సంవత్సరము నగరద్వయ ఆర్య సమాజాలచే నిర్వహింపబడే సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము, హైదరాబాద్ ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినమును ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ వారి ఆధ్వర్యములో, ఆర్య సమాజము మెట్టుగూడ, సికిందిరాబాద్ వారి సౌజన్యముతో వైదిక ఆశ్రమ్ కన్యా గురుకుల్, కుందన్‌బాగ్, బేగంపేట్‌లో తేది 31-08-2023 గురువారము నాడు ఉదయము 09-00 గంటల నుండి నిర్వహింపబడును. కార్యక్రమము యొక్క పూర్తి వివరణ మీకు మళ్ళీ సూచించబడును.

భవదీయ

వెంకట రఘురాములు
మంత్రి సభ

విఠల్ రావు ఆర్య
ప్రధాన్ సభ

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. ఫోన్ : 040-24753827, 24760030, 24756983, 9849560691, 9989909530.

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 18-08-2023 Registered-Reg. No. HD/783/2021-23 RNI No. 990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : **Sri Vithal Rao Arya,** M.Sc., L.L.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone : 040-24753827, 24756983, **Narendra Bhavan : 040 24760030.**
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ

To,

Estd. 1931 Reg. No. 6/52 Fasli (old) 1342/84 (New)

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI

॥ ओ३म् ॥

मा निन्दत - निन्दा मत करो (ऋ ४-५-२)

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.
तेलंगाना, हैदराबाद

म.नं. ४-२-१५, महर्षि दयानंद मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०० ०९५.

ARYA PRATINIDHI SABHA A.P.
TELANGANA, HYDERABAD

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.
తెలంగాణ, హైదరాబాద్

पत्र संख्या : 406263/2023 दिनांक : 31-07-2023

श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रम

महोदय,

प्रान्त की सभी आर्य समाज के अधिकारियों को निर्देश दिया जाता है कि प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी विक्रम संवत् 2080 श्रावण प्रतिपदा दि. 17 अगस्त 2023, गुरुवार से अमावास्या दि. 14 सितम्बर 2023 गुरुवार तक एक मास पर्यन्त अपनी अपनी समाजों में परम्परागत रूप से श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रमों का स्थानीय विद्वान् महानुभाओं के सहयोग से बडे ही उत्साह पूर्वक आयोजन करें। सभी आर्य समाजें स्थानीय विद्वानों के सहयोग से एक सप्ताह या तीन दिन तक का कार्यक्रम विद्वानों को आमन्त्रित कर सप्ताह या त्रिदिवसीय बृहदयज्ञ, भजनोपदेश तथा वेदोपदेशादि का आयोजन करें। कार्यक्रम आयोजित कर गांव और नगर के महानुभावों तथा प्रतिष्ठित परिवारों को आमन्त्रित कर श्रावणी पर्व को धूम धाम से वैभवपूर्वक मनाएं। प्रान्त की सभी आर्य समाजें अपनी अपनी सुविधानुसार श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रम अवश्य आयोजित करें।

इस वर्ष दिनांक 31 अगस्त 2023 गुरुवार के दिन श्रावणी उपाकर्म पर्व, रक्षा बन्धन तथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस भी प्रान्त की सभी आर्य समाजें अवश्य आयोजित कर भव्य रूप से मनाएं।

इस वर्ष नगर द्वय के आर्य समाजों द्वारा मनाया जाने वाला **सामुहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व तथा हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस,** आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के तत्वावधान में, आर्य समाज मेट्टुगुडा के सौजन्य से **वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल, कुन्दन बाग, बेगमपेट** में दि. 31 अगस्त 2023 गुरुवार के दिन प्रातः 9-00 बजे से मनाया जाएगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम की जानकारी नगर की आर्य समाजों को पुनः दी जाएगी।

भवदीय

वेंकट रघुरामुलु
मन्त्री सभा

विट्ठल राव आर्य
प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.- तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500095.

फोन : 040-24753827, 24760030, 24756983, 9849560691, 9989909530.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com

संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र.- तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095. Narendra Bhavan Ph : 040 24760030.